Original Research Paper हिंदी

'मनुष्य के रूप' की कथानक-योजना

डॉ. उत्तम पटेल

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड३७१०.०.- (गुजरात)

ABSTRACT

मनुष्य के रूप' यशपाल का सुप्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें उन्होंने समाजवादी विचारधारा को केन्द्र में रखते हुए परिस्थिति से विवश मनुष्य कैसे अपने रूप बदलता है, को चित्रित किया है। यह घटना-प्रधान उपन्यास है। उपन्यासकार ने रोचक घटनाओं द्वारा इस उपन्यास को पठनीय बना दिया है। इसका एक कारण यह भी है कि इसमें रोमांस और राजनीति दोनों चित्रित हैं। इसमें मनुष्य की हीनता और महानता की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है।

KEYWORDS सोमा, धनसिंह, समाजवाद, घटना, रोमांस।

'मनुष्य के रूप' सन् १९४९ में लिखित यशपाल जी का पाँचवा उपन्यास है। इसमें उन्होंने प्रेम को केन्द्र-बिंदु बनाकर मनुष्य के अनेक रूपों को उद्घाटित किया है।

सोमा एक छोटे-से गाँव की राजपूतानी विधवा लड़की है। जो अपने सास-ससुर, जेठानियों के अत्याचारों से पीडित है। ड्राइवर धनसिंह एक दिन उसे बचाने के चक्कर में ट्रक रोकता है तो वह खराब हो जाती है। इस दुर्घटना में धनसिंह ड्राईवर से वह परिचित होती है। अपनी विवशता में ड्राईवर की हमदर्दी उसे उसकी ओर आकर्षित करती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। लम्बी प्रतीक्षा के बाद धनसिंह के साथ पारिवारिक अत्याचारों से उबकर भाग जाती है। दुर्भाग्यवश दोनों पुलिस द्वारा पकडे जाते हैं। पुलिस धनसिंह को हवालात में बन्द करती है तथा सोमा को अपनी वासना-पूर्ति का साधन बनाती है। यहीं से सोमा का यंत्रणा भरा जीवन आरंभ होता है। सोमा कामरेड भूषण की सहायता से सेठ ज्वाला सहाय के यहाँ आश्रय पाती है। वहाँ पर वह जीवन के दूसरे अनुभवों से गुजरती है। उस घनी परिवार के लोग बहुत दयालु, शरीफ़ और सहानुभूतिशील हैं। उस परिवार की साम्यवादी लड़की मनोरमा, बैरिस्टर जगदीश तथा सभी घरवालों को वह अपना लेती है। मनोरमा से उसकी बहुत अच्छी दोस्ती हो जाती है। वह मनोरमा के भाई बैरिस्टर जगदीश प्रसाद के साथ लाहोर चली जाती है और धीरे-धीरे घर संभाल लेती है। दिनोंदिन बढ़ती निकटता के कारण वह जगदीश की वासना का शिकार बनती है। बैरिस्टर के साथ बढ़ते संबंध उसे घर की पूरी सत्ता दे बैठते हैं। घर के नौकर उसे साहब की रखैल मानने लगते हैं। बैरिस्टर जगदीश की तीसरी संतान के नामकरण के लिए सभी घरवाले इकट्ठे होते हैं। तब जगदीश की भाभी, उसकी पत्नी आदि को नौकरानी सोमा का प्रभाव अखरता है। साडी के बहाने वे सोमा को घर से निकाल देते हैं। बैरिस्टर जगदीश कुछ नहीं कर पाता। वह स्वयं को छिपाता फिरता है। इधर सोमा को बैरिस्टर के ड्राईवर बरकत के साथ भागकर बम्बई आना पड़ता है। बरकत फिल्म का हीरो बनने का दिवास्वप्न देखा करता था। सोमा को भी वह उसी व्यवसाय में लगाने की सोचता है। बरकत का संग सोमा के लिए एक बड़ा ही बीभत्स अनुभव का द्वार खोलता है। फिल्म व्यवसाय के अनेक बुरे अनुभव लेने के पश्चात् बनवारी की सहायता से सोमा मिस पहाड़न के रूप में एक सफल अभिनेत्री बन जाती है।

जब सोमा बैरिस्टर के यहाँ रह रही होती है तब धनसिंह जेल से छूटकर आता है परंतु एक रात अपनी पत्नी सोमा के पीछे पड़े कुछ लोगों का खून कर फिर पुलिस के शिकंजे में फँसने से बचने के लिए धनसिंह लाहोर से दिल्ली आता है। दिल्ली में उस समय राजनीतिक आतंक छाया था। अनेक कॉंग्रेसी नेता गिरफ्तार किये गये थे। उसीकी जबरदस्त प्रकिया के रूप में देशभर में नेताओं को रिहा करने के पक्ष में प्रदर्शन हो रहे थे। धनसिंह पुलिस के प्रति होनेवाली घृणा के कारण प्रदर्शनों में शामिल हो जाता है और पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जाता है।

सोमा को घर से निकलवाने के बाद मनोरमा और भाभियों में तू-तू मैं-मैं हो जाती है। मनोरमा के क्वाँरी रहने पर भाभियाँ आपत्ति उठाती हैं। मनोरमा कामरेड भूषण को प्यार करती है। किन्तु भूषण वर्गीय असमानता को प्रेम के मार्ग में बाधक समझकर मनोरमा से शादी करना स्वीकार नहीं करता। वह एक दिन पार्टी दफ़्तर में काम करने के लिए लाहोर से बम्बई चला जाता है। दूसरी ओर गृह-कलह से ऊबकर मनोरमा भी सुतलीवाला को तार देकर अपने विवाह की स्वीकृति दे देती है और ब्याह कर उसके साथ बम्बई चली जाती है। यहाँ आकर उसे मधुर, सज्जन दिखनेवाले पति की नपुंसकता और नीचता का अनुभव होता है। वह उससे घृणा करने लगती है और परिस्थितिवश अपने पुराने साथी कामरेड भूषण के साथ पार्टी का काम करती रहती है। यही उसके दिल बहलाने का एकमात्र साधन बन जाता है। सुतलीवाला मनोरमा को व्यवसाय-वृद्धि का साधन बनाना चाहता है किन्तु उसमें असफल रहने पर अभिनेत्री मिस पहाड़न की ओर झुकता है तो दूसरी ओर मनोरमा भूषण को अपने जीवनसंगी के रूप में पाने का प्रयत्न करती है। भूषण भी अब वर्ग असमानता, वग-स्थिति को न पाकर उसके प्रति समर्पित होना चाहता है। सुतलीवाला मिस पहाड़न से संबंध बनाये रखता है और मनोरमा को तलाक़ दे देता है।

इधर राजकीय कैदी के रूप में रिहाई होने पर जब धनसिंह जेल से बाहर आता है तब वह देखता है कि चारों ओर निरुत्साह है, पुलिस का दमन बढ गया है। आज़ादी के लिए कुछ करने की वह सोच रहा था कि एक दिन वह आज़ाद हिन्द के रेडियो पर नेताजी का संदेश सुनता है। उससे प्रभावित होकर वह फौज़ में दाख़िल होता है। आज़ाद हिन्द के सिपाही छापा मार उसे अपनी फौज़ में लाते हैं। आगे फौज़ पर लगाये मुक़दमे के बाद वह रिहा होता है। कानपुर में तब 'जलता घोंसला' फिल्म चल रही थी। यह मालूम होने पर कि फिल्म की हीरोइन पहाड़िन सोमा ही है, वह बेचैन हो उठता है। यही बेचैनी उसे बम्बई ले जाती है। बम्बई में संयोगवश उसकी मुलाकात मनोरमा से होती है। कामरेड भूषण के साथ सोमा से मिलने वह उसके बंगले पर जाता है। वहाँ अमीन और बरकत के पहाड़िन से मिलने के लिए मना करने पर हाथापाई होती है। बरकत अपने साथी को मार खाते देखकर धनसिंह पर हथियार से वार करता है किन्तु बीच में भूषण आ जाता है। वह सख्त घायल हो अस्पताल में मर जाता है। बरकत हत्या के भय से भाग जाता है। धनसिंह भूषण के सम्मान पर आँच न आने देने के प्रयत्न में अपनी सारी कहानी कहकर फिर जेल चला जाता है। धनसिंह को पहाड़िन सोमा के रूप में परिचय देने से इन्कार करती है। उस पर मरनेवाली सोमा धनसिंह को जेल जाते निरपेक्ष भाव से देखकर अपने बंगले के भीतर चली जाती है। भूषण की मृत्यु से मनोरमा को गंभीर आघात लगता है। वह अचेत हो जाती है। संक्षेप में यही उपन्यास का कथानक है।

इस उपन्यास की कथावस्तु का विषय विधवा नारी की आत्मनिर्भरता के लिए संघर्ष है। इस संबंध में डॉ.शिवकुमार मिश्र का यह मत उचित ही है कि "इन कहानियों का रचनात्मक पक्ष यह है कि ये औरत के पतन का जिम्मेदार उन आर्थिक सामाजिक शक्तियों को मानती है जिनका उन्मूलन किए बिना स्त्री और पुरुष के बीच स्वस्थ संबंधों की स्थापना हो ही नहीं सकती।"[1]

उपन्यास का आरंभ ट्रक के यूनिवर्सल जॉइंट टूटने से घटी दुर्घटना से होता है। यशपाल जी ने इस आरंभिक घटना का दिलचस्प वर्णन करके पाठक को मोहित कर दिया है। ट्रकवाली ऊपर वर्णित घटना नायक-नायिका धनसिह-सोमा के मिलन की घटना बनकर कथावस्तु का विकास करती है और यह घटना संभाव्य है अर्थात् यशपालजी के इस उपन्यास के कथानक में संभाव्यता का गुण विद्यमान है।

'मनुष्य के रूप' उपन्यास के द्वारा तत्कालीन राजनीति का उद्घाटन हुआ है। इस उपन्यास का कथानक मौलिक, स्वाभाविक तथा रोचक है। सोमा के जीवन से संबंधित घटनाओं ने उपन्यास के कथानक को रोचक बनाया है। इस उपन्यास का प्रारंभ ट्रक के यूनिवर्सल जॉइंट टूटने से घटी दुर्घटना से होता है। यहाँ लेखक ने नाटकीयता की रक्षा की है। यही घटना नायक-नायिका धनसिंह और सोमा के मिलन की घटना बनकर कथावस्तु को विकास की ओर अग्रसर करती है।

धनसिह और सोमा के मिलन की परिणति प्रेम के अंतर्गत होती है। और एक दिन सोमा धनसिंह के साथ भाग जाती है।

इस प्रकार उपन्यास की कथावस्तु का विस्तार घटनाओं से ही होता रहता है। एक के बाद दूसरी घटना घटित होती जाती है, जो परिस्थिति से विवश नारी सोमा के जीवन के विविध पर्तो को उघाडती जाती है। घटनाएँ बहुत ही रोचक एवम् जिज्ञासाप्रेरक हैं। उपन्यास का अंत दुखद है । घटनाओं का सुंदर समायोजन उपन्यास के अंत में देखने याग्य है। डॉ.प्रकाशचंद्र गुप्त के मतानुसार-" 'मनुष्य के रूप' में देशद्रोही के समान एक बार फिर यशपाल ने घटनाप्रधान कथानक उठाया है। पहाड़ी गाँव की विधवा सोमा, घटना-चक्र के प्राबल्य से अनेक रोमांचकारी अनुभव प्राप्त करती हुई अंत में बम्बई के फिल्म जगत् की "हीरोईन पहाड़न" बन जाती है।"[2]

इस उपन्यास में मुख्य तथा प्रासंगिक कथाओं का सुंदर समायोजन किया गया है। भूषण की सैद्धांतिक बातें कथानक के प्रवाह में बाधक प्रतीत होती हैं। वह लेखक की दार्शनिक विवेचना मात्र बन जाती है। उपन्यास के कथानक रोचक बनाने के लिए लेखक ने प्रेम-तत्व को अपनाया है। डॉ.भगवतीशरण मिश्र का यह कथन उचित ही है कि "यद्यपि इस उपन्यास में कोई पात्र प्रभावशाली नहीं है, अधिकांश कामुकता के ही आखेट हैं तथापि घटना-क्रम ऐसे रोचक रूप में प्रस्तुत हुआ है कि पुस्तक पठनीयता से ओतप्रोत हो जाती है। कथा की प्रवहमानता ही यशपाल के इस उपन्यास की सफलता के मूल में है।"[3]

'मनुष्य के रूप' के कथानक में मध्यवर्ग का चित्रण और नारी-समस्या का उद्घाटन किया गया है। "यशपाल के स्त्री-चरित्रों की विशेषता यह भी है कि प्रायः सभी में विद्रोही प्रकृति के दर्शन होते हैं। वे रूढ़ियों, परंपराओं और दबावों के आगे आसानी से हार नहीं मानतीं और हर तरह का खतरा उठाकर भी अपनी बात कहने और अपने मन के अनुसार चलने में वे नहीं हिचकतीं।"[4] इस उपन्यास की सोमा में भी इसी प्रकार का साहस है। मार्क्सवाद का प्रभाव भी कथानक पर लक्षित होता है। इस उपन्यास में कथोपकथन को विविध रूपों में प्रकट कर लेखक ने कथावस्तु को गतिशीलता प्रदान की है। उपन्यास में जहाँ विवरणात्मकता के लिए गुंजाइश है, ऐसे स्थानों पर कथोपकथन द्वारा कथा विकास की विधि अपनाकर यशपाल ने रोचकता उत्पन्न की है।

यशपाल की विचारधारा मार्क्सवादी या समाजवादी सिद्धांतों से प्रभावित है। जिसका उन्होंने स्वयं स्वीकार करके, उपन्यासों में निरूपण किया है। उनके उपन्यास 'मनुष्य के रूप' में भी राजनीति और रोमांस का संमिश्रण देखने मिलता है जो उनकी व्यक्तिगत एवम् सामाजिक समस्याओं तथा विषमताओं का चित्रण उनके मध्यवर्गीय दृष्टिकोण तथा समाजवादी चेतना में परस्पर विरोधी बन गये हैं। उनके उपन्यास में व्यक्त रोमांटिक दृष्टिकोण उनके व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन का परिणाम है, जो हमें सोमा-सुतलीवाला के संबंध में दिखाई देता है तो दूसरी ओर उनका साम्यवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन करना समाजवादी चेतना का प्रभाव है, जैसे 'मनुष्य के रूप' का भूषण।

भूषण बार-बार अपने विचारों को परिस्थितियों के बदलने के साथ-साथ दोहराता है। वह लेखक के विचारों का प्रतिनिधि है। लेखक का मत है कि मनुष्यों को परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहना चाहिये। भूषण मनोरमा से कहता है-"आदमी क्या है, उसके कितने रूप हो सकते हैं, कोई नहीं कह सकता।"[5] सोमा और धनसिंह यही करते हैं। वे आदर्श या नैतिकता की चिंता नहीं करते। लेखक के मतानुसार मनुष्य के समक्ष मूल समस्या जीने की- भौतिक है। कोरा आदर्शवाद जीवन को विकृत बना देता है, मन को संकुचित कर देता है और यह मध्यवर्गीय समाज की विशेषता है।

निष्कर्ष- 'मनुष्य के रूप' घटनाप्रधान उपन्यास है। उपन्यास की कथावस्तु का विस्तार घटनाओं से ही होता रहता है। इसका कथानक रोमांस एवम् लेखक की साम्यवादी विचारधारा तथा तत्कालीन राजनीति के सूत्रों से बुना गया है। इस प्रकार इस उपन्यास का कथानक राजनीति पर आधारित है तो दूसरी और वह रोमांस-प्रेम पर भी आधारित है। इस उपन्यास में कथोपकथन को विविध रूपों में प्रकट कर लेखक ने कथावस्तु को गतिशीलता प्रदान की है। उपन्यास में जहाँ विवरणात्मकता के लिए गुंजाइश है, ऐसे स्थानों पर कथोपकथन द्वारा कथा विकास की विधि अपनाकर यशपाल ने रोचकता उत्पन्न की है।

संदर्भ-संकेत-

1 डॉ.शिवकुमार मिश्र, दर्शन, साहित्य और समाज,1981, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली,पृ.165
2 मधुरेश (संपा.),क्रान्तिकारी यशपालः एक समर्पित व्यक्तित्व,2007,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,पृ.72
3 डॉ.भगवतीशरण मिश्र, हिंदी के चर्चित उपन्यासकार, 2014,राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, पृ.112
4 जवलीमल्ल पारख, आधुनिक हिंदी साहित्यः मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन,2007, एनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली,पृ.114
5 यशपाल,मनुष्य के रूप,1996,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,पृ.142